E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

शमशेर बहादुर सिंह के काव्य मे लोकोत्तर युगबोध का सामाजिक प्रभाव

त्रिष्टुप चंसौलिया

शोधार्थी, विषयः हिंदी ,जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

Paper Rcevied date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15384170

ABSTRACT

शमशेर बहादुर सिंह विशुद्ध सौन्दर्य के कवि हैं। शमशेर की कविताओं को किसी खास तरह की प्रवृत्तियों में बांधकर नहीं देखा जा सकता। उनकी कविता के भीतर कई प्रकार के स्वर हैं। वह शिल्प और शैली की दृष्टि से भी अनूठी हैं। उनकी कविताओं में सामाजिक चिंता के स्वर भी बहुत गहरे हैं। मानवद्रोही समाज को बदलने की तीव्र आकांक्षा भी उसमें उपस्थित है।

महावीर अग्रवाल को दिए एक साक्षात्कार में उनका कहना है कि "सच्ची कविता हमारी भावनाओं का संस्कार और परिष्कार करती है। वह मानवीय संवेदना को गहरा करती है।..... कविता जीवन के सजीव संदर्भों से संयुक्त होगी। उसमें धर्म, राजनीति, दर्शन, प्रेम, क्रांति सब कुछ आ जाता है वह बदलाव में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।.... अब लोग इस बात को समझने लगे हैं कि समस्याओं को उनके सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में ही समझा और सुलझाया जा सकता है, अन्य किसी प्रकार नहीं ।"

कहीं सर्द खूँ में तड़पती है बिजली
जमाने के रहो-बदल कोई लाए। 1

शमशेर जन-मन के कवि हैं वे जनता के हित में बदलाव के पक्षधर हैं। कुछ और कविताएँ की भूमिका में उन्होंने इस बात को स्वीकार किया है कि वे जोशीली पत्रकारिता के कायल हैं। उनका कहना है- "सामाजिक दायित्व के पक्ष से मैं उस उत्कृष्ट रहेटारिक या महान छन्दोबद्ध जोशीली 'पत्रकारिता' का भी कायल हूँ जो मिल्टन और वर्ड्सवर्थ के कुछ प्रसिद्ध सानेटों में बायरन और शैली में कबीर, रवीन्द्रनाथ, इकबाल और निराला में सहज ही श्रेष्ठ काव्य का रूप ले सकी है। बहुत कायल हूँ। मगर यह जिम्मेदारी उठाने की क्षमता कवि के असाधारण शिल्प में ही नहीं उसकी आत्मा में भी होनी चाहिए।

मुख्यबिन्दुः स्वर, शैली, दृष्टि, साक्षात्कार, संस्कार, परिष्कार, संवेदना आदि ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सामान्यतया होता क्या है कि इस क्षेत्र के गहरे दायित्व से जब हम भली प्रकार परिचित नहीं होते तभी ताल और सुर को लेकर इस अखाड़े में उतरते हैं, या नहीं तो शायद हमें सामाजिक वाहवाही दरकार होती है। और यह प्रकाशन- प्रदर्शन औसत अक्षम कलाकार को तो खा जाता है। इसका मतलब यह नहीं कि हम अपने दायित्व से गाफिल हो, कोशिश न करे समाज में नयी चेतना फेंकने की। अगर कविता के माध्यम से ही ऐसा करने की हमें प्रेरणा मिलती है। मगर ऐसी 'चेतना' रचना और उसे फूँकना अभिमन्त्रित शक्ति की तरह समाज के प्राणों में उसे भरना..... इसका अर्थ क्या है, यह ध्यान में रखना आवश्यक होगा । मामूली सामर्थ्य का काम नहीं है। बेशक ऐसी चीजों के सद्य, प्रकाशन, और प्रचार, पर मेरा प्रबल आग्रह है आवश्यक नहीं कि हर दिशा में ऐसी उपादेय चीजें सच्ची

कविता ही मानी जायें। कविता में सामाजिक अनुभूति काव्यपक्ष के अंतर्गत ही महत्वपूर्ण हो सकती है।

जो बना-बनाया फ्रेम है उसको तोड़ते हुए से वे नजर आते हैं। सामाजिक चेतना से इन सब बातों के बावजूद शमशेर, प्रगतिवादी कवियों का जो लैस होते मानवीया करुणा

हुए भी उनकी कविता का महत्वपूर्ण उद्देश्य है जन पक्षधरता, और पर दुःख कातरता। ये सब बातें एक-दूसरे से घुली मिली है, गुथी हुई हैं।

शमशेर की शुरुआती कविताओं में छायावादी शैली की छाप दिखाई देती हैं। छायावादी कविताओं का एक स्वर चूँकि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित है, लेकिन उस दौर का काव्य समूचे नवजागरण से प्रभावित है इसलिए शमशेर की कविता भी इससे अछूती नहीं है। में भारत गुण गौरव गाता' उनकी इसी तरह की कविता है जिसमें राष्ट्रीय आहवाहन का स्वर सुनाई पड़ता है जिसे हम 'जयशंकर प्रसाद' की कविताओं से जोड़कर देख सकते हैं-

"मैं भारत गुण गौरव गाता ।

श्रद्धा से उसके कण-कण को उन्नत माथ नवाता ।

वह भविष्य का प्रेम सूत है, इतिहासों का मर्म पूत है,

अखिल राष्ट्र का श्रम, संयम, तपः कर्मजयी, युग त्राता !

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मैं भारत गुण-गौरव गाता । 2

यह सन् 1933 में लिखी गई कविता है जिसमे आजाद भारत का स्वप्न है। नई आशा-आकांक्षा का स्वर इसमें दिखलाई पड़ता है। चूँकि शमशेर ने अधिकांश कविताएँ प्रेम और सौन्दर्य को लेकर लिखी हैं। इसलिए यह देखना जरूरी हो जाता है कि उनकी सामाजिक चेतना कितनी स्पष्टता के साथ कविता में उपस्थित होती है क्योंकि गाहे-बगाहे उन पर यह आरोप लगता रहा है कि उन्होंने -

मुझे शमशेर

जो वक्तव्य दिए वे सभी प्रगतिवाद के पक्ष में लेकिन उन्होंने जो कविताएँ लिखीं हैं। वे सभी प्रयोगवादी ढंग की हैं। इस भ्रम को दूर करने के लिए भी की बहिर्जगत को संबोधित कविताओं से होकर गुजरना पड़ेगा।

आइए देखते हैं उनकी एक कविता 'एक प्रभातफेरी' (स्वतंत्रता दिवस की एक प्रभातफेरी, इलाहाबाद) यह कविता 'दूसरा सप्तक' में 'स्वतंत्रता दिवस पर 1940' शीर्षक से और 'बात बोलेगी' संग्रह में फिर वह एक हिलोर उठी' शीर्षक से छपी

थी ।

"फिर वह एक हिलोर उठी-

वह मजदूर किसानों के स्वर कठिन हठी !

कवि है, उनमें अपना हृदय मिलाओ !

उनके मिट्टी के तन में है अधिक आग, है अधिक तापः

उसमें कवि है अपने विरह-मिलन के पाप जलाओ !

काट बुर्जुआ भावों की गुमठी को- गाओ !

अति उन्मुक्त नवीन प्राण स्वर कठिन हठी !

कवि है, उनमें अपना हृदय मिलाओ !...

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

यह है शमशेर की अपनी प्रतिबद्धता । एक स्पष्ट समाज दर्शन, तीव्र प्रतिरोध से भरा हुआ। इसमें कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ / जिससे उथल-पुथल मच जाए, जैसा स्वर सुनाई पड़ता है। कवियों से यह आह्वान किया गया है कि मजदूरों

और किसानों के स्वर में स्वर मिलाओ राष्ट्रीय आंदोलन का यह वह दौर था जब साहित्य लिखना और राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेना दो अलग-अलग बातें नहीं थी।

राहुल सांकृत्यायन, यशपाल, गणेश शंकर विद्यार्थी इस बात के उदाहरण हैं। शमशेर इस कविता में सुमित्रानंदन पंत की तर्ज 'दुत झरो जगत के जीर्ण पत्र ! / हे स्त्रस्त ध्वस्त ! हे शुष्क-शीर्ण ! / हिम-ताप- पीत, मधुवात- भीतः तुम वीतराग, जड़, पुराचीन !! पर ही सड़े पुराने अन्य कूप गीतों के / अर्थहीन है भाव, मूक मीतों के कहकर उन्हें भुलाने की बात कह रहे हैं तथा ऐसे गीत गाने को कह रहे हैं। जिससे 'नूतन प्राण हिलोर उठे और उस हिलोर से कवि अपना हृदय मिलाए । शमशेर ने कुछ कविताएँ स्टेट्समेंट की तरह लिखी हैं लगभग नारे की शक्ल में। उनकी राजनीतिक कविताओं पर इस तरह की छाप दिखाई पड़ती है। एक साक्षात्कार में उन्होंने इस बात को खुद स्वीकार किया कि "मेरी राजनीतिक कविताएँ इसीलिए अभिधा में होती है क्योंकि मैं उस समस्या को खुद पहचानना चाहता हूँ। इस तरह की उनकी एक कविता जिसमें कवि की वैचारिक प्रतिबद्धता की भी छाप है- 'लेकर सीधा नारा' जो 1941 में प्रकाशित हुई थी को देख सकते हैं-

"लेकर सीधा नारा, कौन पुकारा

अंतिम आशाओं की संध्याओं से ?

पलकें डूबी ही-सी थीं -

पर अभी नहीं कोई सुनता सा था मुझे

कहीं फिर किसने यह, सांतों सागर पार

एकाकीपन से ही मानो-हार

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

एकाकी उठ मुझे पुकारा कई बार ?

मैं समाज तो नहीं, न मैं कुल जीवन

कण-समूह में हूँ मैं केवल एक कण ।

कौन सहारा मेरा कौन सहारा!..

इस कविता में शमशेर की वर्गीय चेतना उभरकर सामने आती है। जाहिर सी बात है सन् 1941 में लिखी गई इस कविता में वे मार्क्सवादी विचारधारा के मार्ग के अनुसरण की बात करते हुए अपने एकाकीपन, अकेलेपन को भूलते हुए अपने आप को उस समाज को समर्पित कर देने को कहते हैं जिसे फासिस्ट ताकतों से लड़ना है उससे लोहा लेना है। 'कण समूह में एक कण होने के बावजूद उनकी प्रतिबद्धता उस समूह, उस समाज के लिए है जो अभावग्रस्त है, बेसहारा है जो जीवन के सुख से कोसों दूर है।

किसान-मजदूर और अभावग्रस्त भारतीय जनता के सुख-दुःख और उनके दर्द में शामिल होते शमशेर ने ऐसी अनेक कविताएं लिखी हैं जो उद्वेलित करती है तथा उन शक्तियों पर करारा प्रहार भी, जो शक्तियाँ जनता को अपने सुख के लिए दुहती हैं। शमशेर की यह कविता जीवन संघर्ष में अकेले पड़े निराश, हताश व्यक्ति में आशा और विश्वास का भी संचार करती है।

शमशेर की कविताओं में आजाद भारत के स्वप्न के साथ-साथ उसकी एक रूपरेखा भी मौजूद दिखाई देती है जिसका स्वर बहुत मद्धिम होते हुए भी गुलामी की जंजीरे तोड़कर ब्रिटिश राज से मुठभेड़ की एक शक्ति उसमें दिखाई पड़ती हैं।

सन् 1942 में लिखी गई उनकी कविता 'जब वह क्षण आयेगा' को हम उदाहरण के रूप में देख सकते हैं-

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

"जब वह क्षण आयेगा हरने मेरी सब निधि

करने मुझको सब विधि

अक्षम, मैं सब कुछ हरूँगा नहीं:

आने वह क्षण पायेगा नहीं

विषधर सम धरा ग्रहण करेगी तप त्याग,

शान्ति, प्रेम, सत्य, अहिंसाः जन होंगे आश्वस्त !

सुखी हृदय होगा तब जन समाज का सब प्रकार !

कठिन कार्य है जो अब असंगत

अन्यायी राज का होगा तब पार!.5

यह पराधीन भारत में लिखी हुई कविता है। शमशेर इस बात को लेकर आश्वस्त है कि आजाद भारत में जनता का जीवन सुखमय होगा । जब समाज हर प्रकार से सुखी होगा शमशेर की तरह मुक्तिबोध के यहाँ भी इसी तरह का प्रश्न मौजूद है-

समस्या एक मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में सभी मानव

सुखी सुंदर व शोषण मुक्त कब होगे ?

अफसोस ! कि शमशेर और मुक्तिबोध का यह स्वप्न अब तक पूरा न हो पाया। यहीं कारण रहा होगा कि शमशेर का मन बार-बार एकान्त चाहता है। अपनी एक कविता बार-बार मन चाहता है में वे लिखते हैं-

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बार-बार मन चाहता है एकान्त

बार-बार मन चाहता है इन

क्रूर, कठिन, भ्रान्त परिस्थितियों में ले लूँ संन्यास |

करूँ मैं कठोर तप गहनतम आध्यात्म चिन्तन,

दीर्घ मौन व्रत आदि-आदि हुआ करे,

हो यदि वह, अंतरव्यापक-सी संकीर्णता !

कोई चाहे तो इस कविता पर पलायनवाद का आरोप लगा सकता है जैसा की प्रसाद की कविता, ले चल वहाँ भुलावा देकर के साथ हुआ। प्रसाद ने तो स्पष्ट लिखा कि-

"श्रम - विश्राम जहाँ मेले से सृजन, भोर नयनों से

अमर जागरण-बिखरा प्रकाश सघन !.."

इसी तरह शमशेर भी करूँ में कठोर तप से नवसृजन की ओर संकेत करते हैं। शमशेर के गुरु निराला भी 'शक्ति की मौलिक कल्पना' पर जोर देते हैं जिसके लिए विश्राम बहुत जरूरी है। उसी से कोई नया रास्ता निकल सकता है।

जिस तरह के एकांत की तलाश उन्हें है, उसका संकेत वे आगे की पंक्तियों में करते हैं-

नात्सी चिल्लाया-

एक महामानव की शक्ति ही

शान्ति चिह्न !

क्रांति ने फिर दोहराया-

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इनकलाब !

जीवन का बीज है

इनकलाब ! '

शमशेर का समूचा जीवन दर्शन आखिर की पंक्तियों में उठ खड़ा हुआ है। यह क्रान्ति की अभिव्यक्ति है। मनुष्य का संघर्ष शोषणकारी शक्तियों के खिलाफ । जिसके लिए शक्ति के मौलिक कल्पना की जरूरत है। इस कविता में एक प्रकार की आक्रामकता दिखाई पड़ती है। जो शमशेर की अपनी खास पहचान नहीं है लेकिन बहिर्जगत को संबोधित कविताओं का स्वर कुछ इसी तरह का दिखाई पड़ता है उसका स्वर बहुत मद्धिम होते हुए भी उसमें ताप है उसके आंतरिक संवेदना में एक हलचल दिखाई पड़ती है कुछ कुछ प्रगतिवादियों के ढंग की कहीं-कहीं नारे के शक्ल में भी। शमशेर इस बात को लेकर गाहे-बगाहे अपनी राय जाहिर करते थे

कि वे नागार्जुन और केदार नाथ अग्रवाल की तरह कविताएँ नहीं लिख पाते हैं। हालांकि यह बात उतनी सच नहीं है। कविता कहने की शमशेर की अपनी एक खास शैली है इसी कारण उन्हें 'शमशेरियत' कहा गया जिसमें उन्हें काफी सफलता मिली और यहीं बात उन्हें औरों से अलग करती है। सन् 1943 में लिखी गई कविता 'जीवन की कमान' को इन्हीं संदर्भों में याद किया जाना चाहिए। कविता की शुरुआती पंक्तियाँ हैं-

"ढ़ीली इस जीवन की कमान

कसनी है,

छूटेंगे जिस पर कड़े प्राण

के तीर जो कि

भेदेगे सातो आसमान ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

शमशेर की कविताओं में मनुष्य मात्र की समानता के लिए गहरी छटपटाहट और बेचैनी का प्रबल भाव दिखाई पड़ता है। वे इसका इस्तेमाल अपनी कविताओं में प्रतीक रूप में करते हैं। शोषित, वंचित के पक्ष में खड़ा होने की प्रबलता उनमें दिखाई देती है। यहीं कारण रहा है कि उनकी कविताओं में जो मनुष्य रूपायित हुआ है वह अभिजात्य नहीं है। शमशेर का कवि मानस जिस व्यक्ति को रूपायित करता है वह वैभव-विलास, सुख समृद्धि से सर्वदा वंचित है।

संदर्भ सूची

1. शमशेर बहादुर सिंह रचनावली संपादक- रंजना अरगडे, भाग - 1. शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली-110032, संस्करण 2017, पृ. 112,
2. वहीं, भाग - 6, पृ.सं.- 429-430
3. प्रतिनिधि कविताएं, शमशेर बहादुर सिंह, सम्पादक नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नौवा संस्करण 2018, पृ. 25
4. शमशेर बहादुर सिंह रचनावली, भाग-1, संपादक- रंजना अरगडे, अरगडे, शिल्पायन प्रकाशन, संस्करण 2018, पृ. 451
5. वही, पृ.सं. 31
6. वही, पृ.सं. 68
7. तारापथ - सुमित्रानंदन पंत, संपादक - दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2012, पृ. 109
8. शमशेर बहादुर सिंह रचनावली, भाग-6, संपादक - रंजना अरगडे, शिल्पायन प्रकाशन संस्करण 2017, पृ- 479